

---

shrIpAdukAShTakam

श्रीपादुकाष्टकम्

Document Information

---

Text title : pAdukAShTakam

File name : pAdukAShTakam.itx

Category : vishhnu, krishna, puShTimArgIya, aShTaka

Location : doc\_vishhnu

Author : uddhavarachitam

Proofread by : PSA Easwaran psawaswaran at gmail.com

Description/comments : puShTimArgIya stotraratnAkara

Latest update : February 28, 2018

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 17, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीपादुकाष्टकम्



गोकुलेशपादपद्ममण्डनैकमण्डिते  
सुरेशशेषसर्वदेशवासिवृन्दवन्दिते ।  
अनन्यभक्तवाञ्छिताखिलार्थसिद्धिसाधिके  
नमो नमोऽस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके ॥ १ ॥

महार्हरत्ननिर्मिते सुहेमपीतसंस्थिते  
स्वसेवकैकसेविते सुपुष्पवासवासिते ।  
स्वरूपबुद्धिहीनजीवसत्त्वरूपबोधिके  
नमो नमोऽस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके ॥ २ ॥

स्वसेवनैकचेतसामनन्यभक्तिदायिके  
कृपासुधैकसिक्तभक्तकाममोहनाशिके ।  
महान्धकारलीनजीवहृत्प्रकाशचन्द्रिके  
नमो नमोऽस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके ॥ ३ ॥

निजाश्रयस्थिताखिलापदां सदा विदारके  
ह्यनेकतापतप्तजीवगाङ्गवारिवीचिके ।  
समागतस्य सन्निधौ दुरन्तमोहभञ्जिके  
नमो नमोऽस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके ॥ ४ ॥

सदुःखदाववह्निदग्धमुग्धजीवसौख्यदे  
चण्डकालव्यालग्रस्तत्रस्तविश्वमोक्षिचेके ।  
स्वभक्तशुद्धमानसे विराजमानहंसिके  
नमो नमोऽस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके ॥ ५ ॥

सुपादुकेतिकीर्तनाद्भवाब्धितोऽपि तारिके  
स्वसेवनात्सदा नृणां सुखैकवृद्धिकारिके ।  
महेन्द्रचन्द्रब्रह्मभानुमौलिहेममालिके  
नमो नमोऽस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके ॥ ६ ॥

महर्षिदेवसिद्धवृन्दचामरप्रवीजिते  
चतुर्दिगन्तवारिधौ निजप्रतापगर्जिते ।  
भवाब्धिमग्नजीवजातशोकमोहहारिके  
नमो नमोऽस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके ॥ ७ ॥

यथोद्धवाय भक्तिभावभाविताय चार्पिते  
तथैव गोकुलेश्वरेण सेवकाय चार्पिते ।  
निरस्य मायिकं वचः स्वपुष्टिमार्गदर्शिके  
नमो नमोऽस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके ॥ ८ ॥

ये पादुकाष्टकमिदं नियतं पतन्ति  
विप्रोद्धवेन रचितं महतां प्रसादात् ।  
ते यान्ति गोकुलपतेश्वरणारविन्दं  
सान्निध्यमुक्तिगतिमत्र च तत्प्रसादात् ॥ ९ ॥  
इति उद्धवरचितं श्रीपादुकाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by PSA Easwaran

---

—  
*shrIpAdukAShTakam*

pdf was typeset on September 17, 2023

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

